भगवत् कृपा

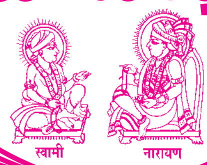

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ।। शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 37 **अंक :** 5 | 4.10.2014 **शनिवार (सितंबर-अक्तुबर)** | **शुल्क – प्रति अंक : ₹** 20.00 **वार्षिक : ₹** 100.00

अंतर में आनंद प्रकटाते हैं शरद् ऋतु के पर्व...

संपूर्ण विश्व में 'भारत' अपनी संस्कृति व पर्वों के लिए प्रसिद्ध है। सभी त्यौहार सांकेतिक हैं, उनका कोई न कोई औचित्य अवश्य है। साथ ही साथ – जैसे कि अंग्रेजी में कहावत है – *एन एम्प्टी माईन्ड इज़ डॅविल्स वर्कशॉप...* यानि – *खाली दिमाग शैतान की कर्मशाला!* बल्कि विभिन्न संप्रदायों – धर्मों के पर्व व उत्सव जन साधारण में नई स्फूर्ति, चेतना व जीवन में नवीनता प्रदान करते हैं, ताकि रोज़मर्रा की एक-सी कार्यशैली से उत्पन्न उबाऊ नीरसता से लोग बाहर आएँ।

और... भगवान स्वामिनारायण ने तो मंगलमय पर्वों के साथ गुणातीत ज्योतिर्धरों की सेरेछाया प्रदान करके अपने आश्रितों का पूरा जीवन ही 'उत्सव' बना दिया व अंतर में प्रतीति करा दी कि 'प्रगट प्रभु' मिलने के बाद मुक्तों के लिए तो रोज़ दीवाली और रोज़ दशहरा! और... भगवत्स्वरूप संत की आज्ञा से मनाए गए सभी शुभ प्रसंगों में की गई 'सेवा' यदि संत की प्रसन्नता हेतु की हो, तो 'सत्कर्म' रूप बन जाती है! और अब... द्वार पर दस्तक दे रहे हैं निम्न पर्व –

3 अक्तुबर, दशहरा – जिस दिन मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्रजी ने, रावणरूपी अहंकार का नाश करके, अमंगल पर सदैव मंगल की विजय की प्रतीति कराई। जैसे रावण की लंका में सीताजी कुंठित व निष्क्रिय होकर रहतीं, उसी भाँति मन-बुद्धि के शिकंजे में 'भक्ति व विश्वास' व्यर्थ के तर्क-वितर्कों के कारण अस्थिर रहते हैं। फलस्वरूप गफ़लत, अनिश्चिंतता, शंका या अधिक होशियारी से घिरे जीव की साधु से आंतरिक दूरी बढ़ती जाती है। ऐसे जड़ मन-बुद्धि को शिकस्त देने के लिए ही, मानो **5 अक्तुबर 1965** को **दशहरे** के ही दिन, गुरुहरि योगीजी महाराज ने **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** को पार्षदी दीक्षा प्रदान करके एक और समर्थ ईंजन जोड़ दिया! ताकि उनके संबंध में आने वाले श्रेयार्थी साधक, बाहरी व अंतर की माया को प्रभु के बल से रौंद कर, विजयी बन सकें और जीवन का सच्चा लक्ष्य-हेतु हासिल कर सकें।

7 अक्तुबर, शरदपूर्णिमा– प्राचीन काल से ही शरदपूर्णिमा का विशेष महत्त्व है। इसी दिन से हेमंत ऋतु प्रारंभ होती है। कहा जाता है कि इस दिन रात्रि को चंद्रमा अपनी समस्त कलाओं से युक्त होकर, पृथ्वी पर अमृत वर्षा करता है और इससे लाभान्वित होने के लिए रात को चाँदनी तले दूध या खीर रखी जाती है। मान्यता है कि रात को 12 बजे के बाद अमृत बने इस दूध या खीर का सेवन करने से रोगी रोगमुक्त होते हैं।

जैसे अमृत बने दूध से लोग रोगमुक्त होते हैं, उसी प्रकार मानो जीवों को **'जन्म-मरण के रोग'** से मुक्त कराने के लिए, 17 अक्तुबर सन् 1785 के दिन, गुजरात के गाँव 'भादरा' में **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी** ने **अवतरण** लेकर, **शरदपूर्णिमा** की तिथि को तीर्थत्व प्रदान किया अर्थात् – शरदपूर्णिमा का महातम और बढ़ा दिया। तभी तो ब्रह्मस्वरूप काकाजी और ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी कहते–

'गुणातीत का प्राकट्य दिन ही हमारी दीवाली है।'

और... इसलिए पिछले कई वर्षों से 'दीवाली कार्ड' के संदेश में प.पू. गुरुजी 'शरदपूर्णिमा' की तिथि लिखवाते हैं। 'अक्षर' यानि– अक्षरब्रह्म के मूर्तस्वरूप मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी या उनके साधर्म्य को पाए ब्रह्मस्वरूप संत से संबंध दृढ़ कर लिया जाए, तो परब्रह्म अर्थात्– भगवान स्वामिनारायण की सेवा का अधिकारी बन सकते हैं-उन्हें पा सकते हैं। एक भक्त द्वारा 'अक्षर' के विषय में पूछे जाने पर मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी ने स्वयं अपना आविर्भाव बताते हुए कहा भी था– *'यह तेरे सामने बैठा है, वही अक्षर!'*

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी प्रत्येक क्षण महाराज की आज्ञा, रुचि, और प्रसन्नता हेतु ही जीते थे। तभी तो, महाराज की मरजी जान कर, कथावार्ता से मुमुक्षुओं को आजीवन लाभांवित करते रहे और करीब 225 वर्ष पूर्व उनके द्वारा की गई स्वरूपनिष्ठा, माहात्म्यज्ञान, नियमधर्म, वैराग्य और ब्रह्मभाव की बातें सभी की समस्याओं, दुविधाओं का–चाहे वह त्यागी हो या गृहस्थी, आश्चर्यजनक रूप से आज भी समाधान देती हैं। उनके जैसी सुस्पष्ट, सचोट एवं लोकोपयोगी उदाहरणों से युक्त मार्मिक बातें शायद ही जगत में किसी ने कहीं सुनी या पढ़ी होंगी। संबंध की महिमा और आत्मीयता की दृष्टि से युक्त मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी जब उस ज़माने में सोरठ के नासमझ-निरक्षर एवं गंवार बालकों को देख कर कहते–

'सत्संगी के इन छोटे लड़कों को देखता हूँ, तो उनमें अवतार कोटि से अधिक दैवत्व दिखाई देता है और... आज तो सत्संग में अनंत पर्वतभाई, गोरधनभाई और अंबरिष हैं...'

इनके महिमायुक्त ऐसे शब्दों को सुन कर या पढ़ कर, प्रभु को राजी करने की राह पर चल रहे मुक्तों को भी 'प्रगट प्रभु' के संबंध से जीवन जीने की आंतरिक प्रेरणा मिलती है। इस मार्ग में यदि कोई बाधा है, तो वह है **'भगवदी से मैत्री'** की कसर। यही कारण है कि मन में जब नकारात्मक विचार उठते हैं, तब महिमा का धोध बहाने के बजाय उन्हीं विचारों में डूबे रहते हुए हमारी चेतना निम्न स्तर पर उतर आती है। परंतु, कृपासाध्य प्रगट प्रभु ने हमें उबारने के लिए ही ऐसे भगवदी का सहारा दिया होता है!

और... मानो हमें प्रगट प्रभु व संत के बल से निश्चिंत व निर्भीक बना कर भवसागर से तारने के लिए ही, आज के दिन **10 अक्तुबर 1965** को, गुरुहरि योगीजी महाराज के वरद् हस्तों पांच दिन पूर्व ही, 'विजयादशमी' के दिन पार्षदी दीक्षा प्राप्त किए **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** ने, गोंडल 'अक्षरदेरी' में **भागवती दीक्षा** लेकर, अनंत चैतन्यों का राहबर बनने की जिम्मेदारी संभाली। प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी को दीक्षा देने के लिए गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा निर्धारित किए गए ये दोनों पवित्र दिन खूब सांकेतिक हैं, क्योंकि–

'दशहरा' यानि विजय की ओर प्रस्थान! सो, जो अटूट सुरुचि से विजय प्रस्थान करता है, वो 'शरदपूर्णिमा' के चंद्र की भाँति पूर्ण 'ब्रह्म' की मंगलकारी अवस्था प्राप्त करता है। वाकई, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी ने, गुरुहरि योगीजी महाराज के साथ 'अद्वैत' संबंध करके अटूट सुरुचि का दर्शन कराया। भले कितनी ही और कैसी भी कसनी की भक्ति अदा करनी पड़ी, लेकिन प.पू. बापा से संबंध दृढ़ करने की सुरुचि को पकड़ कर हिमालय की भाँति वे अडिग रहे और... आज वे स्वयं उन्हीं का अनुरूप 'स्वरूप' बन कर, अनंत मुक्तों को दिव्यता के मार्ग पर चलाने के लिए अविरत परिश्रम कर रहे हैं। अपनी कृपादृष्टि व स्पर्श मात्र से ही युवानों का जीवन सहज ही परिवर्तित कर रहे हैं। **जनवरी 2015** के आरंभ में हम '**आत्मीय युवा महोत्सव**' के रूप में यह दर्शन करेंगे।

शरद्पूर्णिमा की महत्ता यहीं पूर्ण नहीं होती... क्योंकि–आज ही के दिन ब्रह्मस्वरूप काकाजी के मानसपुत्र **प.पू. दिनकरभाई** ने 1 अक्तुबर 1944 में गुजरात के गाँव 'उत्तरसंडा' में जन्म लिया। इन्होंने 'अनिर्देश' की दिव्य विभूति ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के सर्वदेशीय 'गुणातीत ज्ञान' को सर्व व्यापक करने में ही जीवन का सार माना है। प.पू. दिनकरभाई अनादि के कहे जाएँ, क्योंकि स्थूल रूप से ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज से मीलों दूर रहने के बावजूद ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज से 'अद्वैत' करके एकाकार हो गए! तभी तो 2004 में जब शिकागो की धरती पर '**समन्वय महोत्सव**' मनाया गया, तो आशिष प्रदान करते हुए **प.पू. दिनकरभाई** परभाव में बोले– *'आप तो मेरे कपड़ों का जन्मदिन मना रहे हो। हम तो आत्मारूप-ब्रह्मरूप हैं। उस आत्मा की आयु कैसी? उसका जन्मदिन कैसा?'*

सच, जो अखंड ब्रह्मभाव में रहकर जीवन जीता हो, वही ऐसे शब्द बोल सकता है। **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज** स्पष्ट कहते थे– *'मैं साक्षात्कार वाला पुरुष हूँ।'* यूँ, प.पू. दिनकरभाई उस स्थिति को पाए हैं, तभी तो ऐसा बोल पाए होंगे न! लेकिन, साथ ही साथ उनकी प्रत्येक क्रिया में '**गुणातीत का दासत्व**' भी झलकता है। एक बार प.पू. दिनकरभाई सोखड़ा गए थे। भोजन में उन्हें आम रस परोसा गया। फिर प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी ने कटोरा भर कर और प्रसाद दिया। प.पू. दिनकरभाई ने वह भी उमंग से पीया। प.पू. स्वामिजी ने कहा– *'आपको यह रस ज़्यादा पिला दिया न!'* प.पू. दिनकरभाई ने सहजता से उत्तर दिया– *'आपका दिया यह दूसरा कटोरा पिया, वह सही था। इससे पहले जो पिया था, वह ज़्यादा हो गया!'*

इस प्रकार प.पू. दिनकरभाई ने प.पू. स्वामिजी के प्रति स्वामीसेवकभाव का तो दर्शन कराया ही, साथ ही सभी को एक संदेश भी दिया कि प्रभु को अर्पण किया गया नैवेद्य 'प्रसाद' बनता है और प्रगट

प्रभु जब स्वयं प्रसाद देते हैं, तो उसे अनुग्रह कहा जाए, जिसे यदि, प.पू. दिनकरभाई की भाँति, महिमा से लिया जाए, तो वह हमारे भीतर अद्‌भुत परिवर्तन ला देता है! तभी तो 'समन्वय महोत्सव' में आशिष वर्षा करते हुए **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** ने प.पू. दिनकरभाई का माहात्म्य दर्शन कराते हुए कहा था– *'यदि हम में से मान टल जाए तो साधु के सभी चौसठ गुण हम में आ जाएँ। प.पू. दिनकरभाई में ऐसी सहजता है कि वे वाणी से कभी भी फेल नहीं होते। हृदय में गुरुभक्ति या प्रभुभक्ति न हो, तो वाणी से मान की अभिव्यक्ति होगी, होगी और होगी ही।'*

तो, ऐसे दिव्य पुरुषों के प्रसंगों की ओर निगाह रखते हुए, आदि गुरु गुणातीत के प्राकट्य एवं नूतन वर्ष के निमित्त **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज** द्वारा दिए निम्न आशीर्वचनों का मर्म समझें और... हमें हुई 'प्रगट प्रभु' की प्राप्ति का लुत्फ़ उठाएँ।

भगवान स्वामिनारायण ने वचनामृत वड़ताल 3 एवं अन्य कई जगह
चार प्रकार के सिद्ध पुरुषों एवं संत पुरुषों की लक्षण सहित पहचान दी है...
गुणातीत संत की विशिष्टता यह कि वे 'संकल्प की बीमारी' को टालते हैं
और
वृत्ति को निर्मूल करके सहजानंद के परात्पर स्वरूप में जोड़ कर, जीव को निर्भय एवं निश्चिंत बनाते हैं।
'शुद्ध गुरुपरंपरा के वारिसदारों के रूप में, गुणातीत प्रणालिका के इन संतों एवं मुक्तों को पहचानना ही सच्चा निर्वासनिकभाव और एकांतिक धर्म सिद्ध करने का अनिवार्य लक्षण है'–
इस सत्य को ब्रह्मस्वरूप गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज एवं गुरुहरि योगीजी महाराज ने प्रतिपादित किया...
ऐसे जंगम 'नैमिषारण्य क्षेत्र' में, किसी भी प्रकार के भेदभाव बिना
खुले दिल से–प्रामाणिक रूप से सत्संग करेंगे तो सत्संग की खुशहाली/ हरियाली का अनुभव होगा।
लेकिन, हमारे स्वभाव के कारण या किसी भी प्रकार की मानसिक सोच के कारण
कहीं-कहीं अंदरूनी 'एकता' या 'अद्वैत' नहीं रहता।
तो ऐसे 'वड़वानल' और 'बिजली' जैसे संतों-मुक्तों को पहचान कर,
उनके साथ अंतर का आध्यात्मिक संबंध दृढ़ करके,
'स्वामिनारायण' का नाममात्र भी जो लेता हो, उसे सिर का ताज मानने का दृढ़ निश्चय करें।
फलस्वरूप, सर्वत्र सुख, शांति और आनंद प्राप्त होगा।
और... डंके की चोट पर यह बात सर्वत्र फैले
यही शरदपूर्णिमा का–गुरु गुणातीत के प्राकट्योत्सव मनाने का-फल है।
नए वर्ष से इसका दिव्यानंद सभी प्राप्त करें
और
योगीजी महाराज के कार्य की शोभा बढ़ाएँ यही अंतर की अभीप्सा!

– ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज, 1973

तीन प्रकार के कुसंग से बचने के लिए महाराज ने सच्चे संत का समागम करने पर अत्यधिक ज़ोर ड़ाला है।

सो, **'सत्संग' हो सके तो करना और 'सेवा' भी हो सके तो करना,**

लेकिन 'कुसंग' व 'असेवा' में तो पड़ना ही नहीं।

प्रगट के साधकों को इतना जागरूक व सावधान तो अवश्य रहना ही चाहिए।

महाराज के समय में पर्वतभाई, गोरधनभाई जैसे 'भगवदी' गृहस्थ थे

और

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी के समय में भी गुणातीत के तद्वद्भाव को पाए

भगतजी महाराज, जागास्वामी एवं कृष्णजी अदा थे।

इसी प्रकार ब्रह्मस्वरूप गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने भी चचाणा गाँव के मेरुभा, सांकरदा के मावसंग भगत

और

मुबंई के भगवानदास सेठ जैसे निर्दोषबुद्धि वाले 'भगवदी' की खुल कर प्रशंसा की है।

ब्रह्मस्वरूप गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज बार-बार कहते–

तत्कालीन मुक्त ***जो ऐसों के संग में रहते हैं, उनका जीव बलिष्ठ हो जाता है***

और

जो इनसे द्वेष रखते हैं-इनमें दोष देखते हैं, उनका भला करने में भगवान स्वयं भी निरुपाय होते हैं।

इसी प्रकार, **गुरुहरि योगीजी महाराज** का ब्रह्मसूत्र है–

पू. शास्त्रीजी महाराज के संबंध वाले-उनके अल्प आश्रित के भी दोष-अवगुण देखना ही नहीं।

सो, प्रगट एकांतिक जीवन मुक्तों के संग में इन तीन प्रकार के 'कुसंग' से बच कर,

ज्ञान के भेद से फैली 'मुक्तों की माया' रूपी चौथे प्रकार का कुसंग,

जो अंदरूनी आपसी सुहृद्भाव एवं 'महिमा का साक्षात्कार' अर्थात्–

धाम, धामी और मुक्तों की परिपक्व निष्ठा समेत, समग्र सत्संग में दिव्यता रखने में बाधारूप बनता है।

सच्चेभाव से 'एकांतिक' के संग में दृढ़ विश्वास रख कर लग पड़ने से यह भी टल जाता है।

प.पू. योगीजी महाराज के शब्दों में–

अभी भी महाराज चल बसे नहीं, एकांतिक गए नहीं; बल्कि सभी मौजूद हैं।

यूँ आज भी यह मौका सुलभ है। तो, नए वर्ष से ऐसी दिव्यभावना कायम रहे

और

अखंड 'अक्षरधाम का सुख' प्राप्त करते हो जाएँ–यही गुरुहरि के चरणों में प्रार्थना।

– ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज, 1968

भिन्न-भिन्न वर्षों में **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज** द्वारा दिए सद्विचारों ने मुख्यतः यही संदेश दिया है कि किसी का भी दोष-स्वभाव देखे बिना केवल महाराज के सच्चे संत-गुणातीतभाव को पाए संत का समागम किसी भी संजोग में छोड़ेंगे नहीं-उनसे चिपके रहेंगे, तो हर प्रकार से सत्संग का सुख महसूस कर पाएँगे। **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतनंदस्वामिजी** ने भी प्रकरण 1 की 239वीं बात में कहा है–

'प्रतिदिन लाख रुपये (चंदा) लाता हो, पर सत्संग की टीकाचर्चा करता हो, तो वह हमें नहीं जँचता है और यदि कोई सोए रह कर खाता रहता हो, पर भगवान के भक्त की महिमा गाता हो, तो उसकी सेवा मैं करवाऊँ; ऐसा मेरा स्वभाव है।'

सो, **23 अक्तुबर** को आ रहे **दीपावली** के महापर्व पर सहज प्राप्त हुए अद्वितीय 'सत्संग' के दीयों में, महिमा-माहात्म्य का घृत भर कर, 'प्रभु प्रसन्नता' की अखंड ज्योत प्रज्ज्वलित करके, **24 अक्तुबर** को **नूतन वर्ष** में प्रवेश करते हुए, सदैव कानों में गूँजती **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज** की आशिष–

'जाओ, आज तक का सब माफ़'–को हम विफल न जाने दें–यही भगवान स्वामिनारायण एवं सभी स्वरुपों के श्रीचरणों में मंगल पर्वों पर याचना...

✡✡✡

'परावाणी' से अनमोल चिंतनकणिकाएं

* अन्य जगह जितना काम एक कल्प में होता है, उतना यहाँ एक दिन में होता है।
* हमें फिलहाल हर प्रकार से सानुकूलता है–आधि, व्याधि, उपाधि नहीं है; सिर्फ संत समागम करके आत्मा और परमात्मा का ज्ञान प्राप्त कर लेना है।
* संत समागम करने में जितनी कसर है, उतनी खोट है। जितना समागम किया हो, उतने गुण हम में आते हैं।
* ज्ञान देकर जीव में भगवान की मूर्ति पधरा देना **'साधु का धर्म'** है। हेतु तो कई हैं, लेकिन मुख्य हेतु यह है कि जीव को भगवान की प्राप्ति करवा देना। अनादि काल से जीव चौरासी की खान में भटकता रहता है, उसमें से उसे निकाल कर **'एकांतिक धर्म'** सिद्ध करवाना साधु का काम है।
* बड़े पुरुष जिस मार्ग पर चले हों, उनके नक्शेकदम पर चलेंगे तो हम लूटे नहीं जाएँगे। बड़े पुरुषों के वचन, उनके रहन-सहन व गुणों के विषय में सोचेंगे तो उनके जैसे गुण हम में भी आएँगे।
* संत समागम करने से बहुत लाभ होता है। लेकिन, हृदयपूर्वक समागम करना चाहिए।
* भगवान के भक्त की अधिक से अधिक सेवा करनी चाहिए। उस सेवा के फलस्वरूप भगवान के भक्त के गुण हम में आते हैं।
* अनादि काल से हम जन्म-मरण के चक्कर काट रहे हैं। उस कष्ट को मिटाने के लिए साधु-संतों और हरिभक्तों के लिए सह लें, तो इस कष्ट से मुक्त हो जाएँगे।

* ढीली-ढाली बातें करने वाले बहुत मिलेंगे, लेकिन उनकी बातों पर ध्यान नहीं देना। बलभरे शब्द-भगवान के स्वरूप के गुण-कीर्तन- महिमा-कथावार्ता-ब्रह्मभाव-निर्दोषबुद्धि की बातें हमें रात-दिन सुननी चाहिए, ताकि हम कभी भी निर्बल न हों।
* भगवान और सत्पुरुष की 'सेवा' हो जाए, वो ही 'मेवा' है।
* बल में रहना चाहिए, अपने आपको कभी भी दुर्बल नहीं मानना।
* बड़े संत-भगवान हमें कितनी ही कसनी में डालें, फिर भी हम परेशान न हों।
* जो भगवान और साधु मिलने थे, वे हमें मिल गए हैं।
* सोने के महल ख़ाक करके भी ये साधु मिले, तब भी साधु सस्ते में मिले हैं–यूँ जानना।
* जब 'प्रगट भगवान' का **साक्षात्** संबंध हो जाए, तब काम पूरा हो ही गया समझना।
* पूर्व के संस्कार होंगे, तभी महाराज ने पकड़ा है। भगवान जबरन् पकड़ते हैं, छटकने नहीं देते। भले ही दूर भागता रहे, लेकिन वे छोड़ते नहीं हैं। भगवान टेढ़े के साथ प्रतिकूल/ विपरीत और सरल के साथ अनुकूल एवं रंक के पास रंक रहते हैं।
* यह हरिमंदिर बन रहा है, हॉल बन रहा है, उसमें जो हाथ बटाएगा उसका काम हो जाएगा। जो दूर भागेगा, इधर-उधर खिसक जाएगा, वो पछताएगा।
* सभा में बैठ कर जो कथावार्ता सुनता है, वह ज्ञान प्राप्त करता है। दूर रहे, झपकी लेता रहे-सो जाए या इधर-उधर घूमता रहे, उसे ज्ञान प्राप्त नहीं होता।
* सीने पर जो वार झेले, वही शूरवीर कहलाता है। सो, हमें शूरवीरता रखनी है।
* हम यदि समूह में हो रही सेवा करने लग पड़ें, तो भगवान भी सहाय करते हैं... बल की बातें करेंगे, तो बल मिलेगा।
* आगे सत्संग तो दस हज़ार गुणा बढ़ेगा; लेकिन यह साधु और ये बातें नहीं मिलेंगी।
* हम पर यदि श्रीजी महाराज या बड़े पुरुष राजी हो जाएँ, तो 'अक्षरधाम' बख़्शिश में दे देते हैं। भगवान इतने उदार हैं कि अपना अक्षरधाम तक बख़्शिश में दे देते हैं। लेकिन, महिमा समझेंगे, तो उनसे करीबी रहेगी और यदि महिमा नहीं समझेंगे, तो दूरी बनी रहेगी।
* जो जीव बड़े पुरुष के संबंध में आ जाता है, उसका कल्याण हो जाता है।
* एकांतिक धर्म सिद्ध करने की, ब्रह्मरूप होने की और निर्दोष होने की विरासत हमें मिली है। यह विरासत लेने की रीति सीख जाएं, तो काम हो जाए, वर्ना कोरे के कोरे रहेंगे।
* बड़े पुरुष और भगवान की पहचान नहीं होगी, तो अधूरा रह जाएगा।
* भगवान को काल सरीखा नहीं जाने, कर्म सरीखा न जाने, माया सरीखा न जाने, स्वभाव सरीखा न जाने, पुरुष सरीखा न जाने, बल्कि 'निर्दोष' मानें तो भगवान के कल्याणकारी गुण उस हरिभक्त में–संत में आते हैं।

(शेष अगले अंक में)

✡✡✡

गुजरात की आँख का तारा 'सापूतारा' में आंनदोब्रह्म शिविर...

'गुरुजी क़वायद यही कराएँ,
कुटुंबभाव सत्संग में जगाएँ...'

भजन की उपरोक्त पंक्ति का हुबहू दर्शन सपरिवार कराया मुंबई के **प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी**, **प.भ. अनिलभाई 'शेठ'** एवं **प.भ. विनोदभाई शाह** ने!

हम में से अधिकतर भक्त जानते हैं कि करीब पिछले पाँच साल से प.भ. अनिलभाई 'शेठ' के सुपुत्र **प.भ. मिलनभाई** ने दिल्ली मंदिर के निर्माण कार्य में ऐसी सेवा की कि आज उनका घर ही मंदिर बन गया! मुंबई में मध्यम वर्ग के लिए एक अच्छा फ्लैट बनाना बहुत मुश्किल कार्य है। लेकिन, माणेक परिवार की सेवा में श्रद्धा व धैर्य से वह दिन भी आया कि घाटकोपर में उनका एक बड़ा-सा फ्लैट तैयार हो गया! इनकी ऐसी भावना थी कि अगस्त में प.पू. गुरुजी के वरद् हस्तों फ्लैट का उद्घाटन हो। अतः चार महीने पहले ही प.पू. गुरुजी ने संतों, युवकों, बहनों एवं हरिभक्तों को मिला कर लगभग बीस-पच्चीस मुक्तों की लिस्ट बनवाई। प.पू. गुरुजी इतने सारे मुक्तों को लेकर मुंबई आ रहे हैं, यह जान कर पवई मंदिर से खूब अपनेपन से जुड़े **प.भ. विनोदभाई शाह** एवं उनकी पत्नी **सौ. जयश्री बहन** ने भी भावना प्रकट की कि अगस्त महीने में मौसम अच्छा होता है, तो प.पू. गुरुजी **'देवलाली'** स्थित उनके बंगले में पधरामनी करके उसे पावन करें। फिर तो हमेशा की तरह धीरे-धीरे मुक्तों की संख्या बढ़ने लगी और... माणेक परिवार के अंतर की भावना भी यह थी कि दिल्ली मंदिर से सभी संत-सेवक एवं प.पू. दीदी के साथ अक्षरज्योति की सभी बहनें भी आएँ।

कई स्कीमों में एयर-टिकिट्स इतनी सस्ती मिल जाती है कि किराया ट्रेन के फेयर से भी कम पड़ता है। यह फ़ायदा उठाते हुए प.पू. गुरुजी ने सभी की एयर टिकिट्स करवाईं। अंत में करीब सत्तर मुक्तों की लिस्ट बनी। तब, प.पू. गुरुजी ने इच्छा ज़ाहिर की कि हम पवई के भाइयों व अमदावाद के कुछ मुक्तों को भी साथ लेकर, 'देवलाली' में दो दिन की शिविर करें। मुक्तों की संख्या बढ़ने के कारण प.भ. विनोदभाई व प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी 'देवलाली' में खाने-पीने एवं रहने की व्यवस्था देखने के लिए भी गए। परंतु, चातुर्मास के दौरान अधिक संख्या में जैन श्रद्धालुओं के वहाँ आने के कारण व्यवस्था करने में मुश्किल पड़ रही थी। पर, जैसे कि हम सभी प्रगट स्वरुपों के श्रीमुख से सुनते हैं–

सब कुछ ब्रह्मनियंत्रित है।

सो, प्रभु ने ही गुजरात के एकमात्र हिल स्टेशन **'सापूतारा'** जाने की सैटिंग की। बाद में प.पू. भरतभाई से मालूम हुआ कि ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज एक बार वहाँ गए थे। सो, यह ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का प्रासादिक स्थल है। यूँ, खूबसूरत पहाड़ियों से घिरे गुजरात का **'मिनी काश्मीर'** कहलाने वाले **'सापूतारा'** की शिविर के लिए तैयारियाँ शुरू हो गईं। करीब तेरह वर्ष पहले प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी के परिचय से 'लॉर्ड्स प्लाज़ा' के मालिक **प.भ. सतीश बंसलजी** प.पू. गुरुजी के संपर्क में आए थे और तब से वे बहुत अपनेपन से जुड़े हैं। इत्तफाक से 'सापूतारा'

का हॉटल **'आकार लॉर्ड्स इन'** भी उन्हीं के हॉटल के ग्रुप का है। यह जान कर कि प.पू. गुरुजी डेढ़ सौ हरिभक्तों को साथ में लेकर देवलाली में शिविर करना चाहते थे, उन्होंने देवलाली की बजाय 'सापूतारा' में शिविर करने के लिए आमन्त्रित किया। प.भ. सतीशजी ने हॉटल के तकरीबन सभी कमरे देने की भी 'हाँ' भर दी, ताकि सभी शिविरार्थी इकट्ठे रह सकें और प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी एवं प.भ. मिलनभाई माणेक वहाँ जाकर सारी व्यवस्था देख कर भी आए।

प.पू. गुरुजी ने दिनाँक **11 अगस्त** से **16 अगस्त 2014** तक सापूतारा एवं मुबंई का कार्यक्रम बनाया। 11 अगस्त की सायं 5:20 की फ्लाईट से प.पू. गुरुजी अन्य छः मुक्तों के साथ मुंबई के लिए रवाना हुए। रात को पवई मंदिर पहुँच कर भोजन किया। देर रात तक प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई व पवई के भाइयों के साथ बैठ कर विश्राम करने के लिए चले गए। अगले दिन यानि 12 अगस्त की सुबह रोज़ की भांति साढ़े पाँच-पौने छः बजे जाग गए और नित्य-क्रिया से निवृत्त होने के बाद नाश्ता किया। अमदावाद के मुक्त भी गुजरात मेल से सुबह जल्दी मुंबई पहुँच गए। इसी प्रकार, दिल्ली से तड़के एक-एक घंटे के अंतराल की तीन अलग-अलग फ्लाईट्स से अन्य सभी मुक्त मुंबई के लिए रवाना हुए। फ्लाईट में सभी मुक्तों ने **सौ. रेणुभाभी** एवं **सौ. मीताभाभी** द्वारा बना कर लाई गईं सैंडविच का प्रसाद लिया। सुबह करीब दस बजे तक मुंबई एयरपोर्ट पर एकत्रित होकर ग्यारह बजे वे पवई मंदिर पहुँचे। मंदिर के प्रांगण में प.पू. गुरुजी, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई सबकी राह देख रहे थे। श्री ठाकुरजी के दर्शन करके, प.भ. अनिलभाई 'शेठ' द्वारा आयोजित इडली-चटनी व चाय-कॉफी का नाश्ता करके, जल्द ही सभी पूर्व निर्धारित दो बसों में बैठ गए और... धुन-भजन करते हुए 'नासिक' के लिए रवाना हुए।

प.पू. गुरुजी के साथ शिविरों में लगातार जाने वाले सभी मुक्त जानते हैं कि प.पू. गुरुजी सभी की सुख-सुविधा का खूब ध्यान रखते हैं। इसी बात को ध्यान में रखते हुए **सौ. डॉली दीदी, सौ. जयश्री बहन, सौ. दीपा मासी, सौ. मानसी एवं प.भ. दीपक** इत्यादि ने जाते और आते-दोनों बार रास्ते में सभी को देने के लिए अलग-अलग पैकेट्स तैयार किए थे, जिनमें सूखे नाश्ते के साथ-साथ मुखवास तक शामिल था! मिड-वे में मुंबई के मुक्तों द्वारा आयोजित पैक्ड फूड सभी ने बस में ही लिया। प.पू. गुरुजी एवं प.पू. भरतभाई के साथ आए चार गाड़ियों के मुक्तों ने भी मिड-वे में एक जगह दोपहर का भोजन किया और नासिक के लिए रवाना हो गए। नासिक पहुँच कर प.पू. गुरुजी बसों की राह देखते हुए एक धर्मशाला में बैठ गए, जहाँ प.पू. भरतभाई के परिचित **प.भ. चंद्रकांतभाई** ने अल्पाहार की व्यवस्था की थी। इसी दौरान नासिक को पावन करती गोदावरी नदी के घाट पर, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. राजुभाई ठक्कर एवं पू. अश्विनभाई ने, अक्षरनिवासी **पू. राजुभाई भट्ट के अस्थिकुंभ** को प्रवाहित करने के लिए पूजाविधि की। करीब चार बजे दोनों बस आ जाने के बाद प.पू. गुरुजी सभी के साथ घाट पर गए। वहाँ **प.पू. गुरुजी, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, प.पू. योगिनी बहन एवं प.पू. दीदी ने पूजन एवं धुन होने के पश्चात् अस्थिकुंभ**

प्रवाहित किया। धर्मशाला में आयोजित अल्पाहार करके करीब छः बजे सभी ने सापूतारा के लिए प्रस्थान किया। करीब साढ़े आठ बजे **सापूतारा** के हॉटल **'आकार लॉर्ड्स इन'** में पहुँचे। समढियाळा से **प.पू. निर्मलस्वामिजी** एवं **पू. ज्ञानस्वरूपस्वामिजी** भी वहाँ पहुँच चुके थे। पूरे दिन की ट्रावेलिंग के कारण सभी थके हुए तो थे, पर जैसे कि प.पू. गुरुजी ने कहा था–

हॉटल में रहने, नहाने-धोने, खाने, सोने की सुविधा देखते ही सभी की थकान-भाग ही गई!

सो, सर्वप्रथम वहाँ के भूतल पर स्थित हॉल में, हॉटल के मैनेजर **श्री दीपक हल्दरजी** सहित पूरे स्टाफ को बुला कर, प.पू. गुरुजी ने सभी को तुलसी पत्र के रूप में आशीर्वाद दिया और 10 अगस्त को 'राखी' पर्व था, सो प.पू. भरतभाई ने सभी को राखी बाँधी। इसी प्रकार लेड़िज़ स्टाफ को प.पू. दीदी ने राखी बाँध कर तुलसी पत्र का आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात् रात का भोजन करके निर्धारित कमरों में सभी सोने के लिए गए।

अगले दिन यानि– **13 अगस्त** की सुबह **'फिक्स्ड टाइम धुन'** के लिए हॉल में सभी एकत्रित हुए। प.पू. गुरुजी, प.पू. निर्मलस्वामिजी, प.पू. भरतभाई एवं प.पू. वशीभाई की निश्रा में रोज की भाँति सुबह 6:40 पर 'उगती प्रभा' प्रार्थना के साथ धुन की शुरुआत हुई। 7:05 को धुन समाप्त होने के बाद, प.भ. राकेशभाई ने सूचना दी कि सभी साढ़े नौ बजे तक नाश्ता करके तैयार हो जाएँ। यदि बारिश नहीं हुई, तो सापूतारा का एक वॉटर फॉल देखने के लिए जाएँगे। पर, दस बजे के करीब गाड़ियों एवं बसों द्वारा सभी वॉटर फॉल देखने जाने के लिए जैसे ही निकले कि बारिश प्रारंभ हुई, सो पाँच मिनट में ही सभी वापिस आए और फिर हॉटल के सामने लेक में बोटिंग के लिए गए। तब भी बारिश तो हो ही रही थी, सो बाकी सभी को बोटिंग के लिए भेज कर प.पू. गुरुजी वहाँ एक शॅड के नीचे बैठे रहे। इसी दौरान नागपुर के **एक अपरिचित मराठी भाई,** वहाँ से गुज़रते हुए प.पू. गुरुजी का दर्शन करने के लिए आए। उन्होंने मराठी भाषा में अपनी कोई समस्या बताई। तो, **प.पू. गुरुजी ने भी मराठी में ही उत्तर देते हुए उन्हें 'स्वामिनारायण मंत्र' एवं प.पू. भरतभाई व प.पू. वशीभाई की महिमा बताई और ज़ोर से धुन करने का तरीका स्वयं बताया। हार्ट ऑपरेशन के बाद प.पू. गुरुजी अधिकतर ज़ोर से धुन नहीं करते। पर, सापूतारा शिविर में यह एक स्मृति मिली!**

दिल्ली से प.पू. गुरुजी, आर्टिस्ट **प.भ. रवि** द्वारा अखंड भारत के लौहपुरुष स्वर्गीय **सरदार वल्लभभाई पटेल** का **पुश पिन** वाला चित्र बनवा कर ले गए थे। सो, दोपहर 12:30 बजे हॉटल में लौटने के बाद प.पू. गुरुजी ने वह चित्र 'आकार' हॉटल के मैनेजर श्री हल्दरजी को भेंट में दिया। दोपहर का भोजन करके सभी विश्राम करने के लिए गए। शाम को चाय-नाश्ता करके करीब 6:30 बजे हॉल में आरती के लिए इकट्ठे हुए। आरती के बाद 'आनंदोब्रह्म शिविर' की पहली सभा आरंभ हुई। भजन के बाद सुरत से आए **प.भ. धनंजयभाई**, दिल्ली के **प.भ. गौरव गर्गजी** एवं पवई के **पू. अश्विनभाई** ने प्रासंगिक उद्बोधन किया। तत्पश्चात् **प.पू. भरतभाई** ने शिविर का माहात्म्य बताते हुए कहा–

* *आनंदोब्रह्म शिविर!! काकाजी की प्रसादी के बहुत सारे स्थान हैं। हमने देखा है कि गणेशपुरी, लोनावाला, माथेरान, विहार लेक इत्यादि जगह में से काकाजी अधिकतर महीने या दो महीने में कहीं न कहीं दो-तीन दिन शिविर के लिए ले जाते थे। जो भी साधक वर्ग हैं या जो भी प्रगति करना चाहते हैं, उसके लिए वे ऐसी शिविर एरेन्ज करते थे।*

काकाजी के स्वधामगमन के पश्चात् हमने उनकी ऐसी प्रासादिक सभी जगहों–रूमला गोलार, आबु, महाबलेश्वर, पंचगीनी में शिविर की। पर, गुरुजी ने यहाँ शिविर करके हमारा यहाँ आना भी बना लिया, क्योंकि एक सापूतारा रह गया था। काकाजी यहाँ पधारे थे। ऋतंभरा विश्वविद्यालय की पूर्णिमाबेन पकवासा हैं, वो आदिवासी बहनों के लिए कार्य करती थीं। वे काकाजी के संबंध में आई थीं, इसलिए काकाजी यहाँ आए थे।

* *स्वामिनारायण भगवान ने वचनामृत में बताया है कि करने जैसी दो ही चीज़ें हैं।*

1. भगवान को कर्ता हर्ता मानना।

2. ऐसे जो गुणातीत संत-स्वरूप हैं, जो दिव्य पुरुष हैं उनके गुणगान गाना। भगवान और उनके भक्तों के गुणानुवाद करना।

यही दो बात यहाँ 'आनंदोब्रह्म शिविर' में सहज हो रही है। अध्यात्मज्ञान बहुत सरल है, लेकिन हमारे मानने में कचास है। ऐसे सच्चे प्रभु मिले हैं, ऐसा सुंदर समाज मिला है, तो भी हम उसमें नॅगेटिवीटी ढूँढते हैं और जो आनंद वो देना चाहते हैं, वो हम ले नहीं पाते और दुःखी रहते हैं। ***ऐसे शिविर का आयोजन इसीलिए कराते हैं कि हम समझ पाए कि हमें हमेशा आनंद में रहना है और जीव में दृढ़ करना है कि हमें क्या प्राप्ति हुई है... ऐसी महिमा की दृष्टि से जीवन जीएँगे, तो सच में ये पुरुष राजी हो जाएँगे...*** *इतने सारे भक्तों का समाज! महिमा से सिर्फ उनका दर्शन करेंगे, तो भी हमारा काम हो जाएगा। ऐसे माहात्म्य से हम भरे रहें...*

तत्पश्चात् **प.पू. गुरुजी** ने आशीर्वाद देते हुए कहा–

बापा के समय जो समाज था और अब जो समाज है, उसमें काफी फांसला है। लेकिन, अगर हम बेज़िक चीज़–'महिमा' नहीं समझेंगे, तो गुणातीतानंदस्वामिजी ने अपनी बात में कहा है कि जीव दुर्बल रहेगा। अगर हम ये बात नहीं पकड़ेंगे, तो भले ही प्रगति खूब हुई है, पर भूलें नहीं कि दिल्ली काफी दूर भी है। पर, ये ***'महिमा' की बात समझ लेंगे, तो 'प्रगट प्रभु' हमें तो इन्स्टन्ट लिफ्ट कर देंगे।*** *लेकिन, हम उसी चौराहे पर खड़े-खड़े ऐसी ही बात किया करते हैं कि–कुछ होता नहीं, ये खाली महिमा की बातें हैं, हमारे अनुभव में तो ऐसा कुछ आया नहीं... पर, हमने वो बात-महिमा की-सच्चाई से पकड़ी नहीं हैं... हम कई चीज़ों को समझते नहीं हैं या मानते नहीं है।* ***हमें संतों से लगाव जरूर हो गया है, लेकिन इनकी महिमा हम नहीं समझते,*** *यदि समझे होते तो ये चीज़ बीच में आती नहीं।*

काकाजी *बहुत शुरुआत में कहते थे–* ***यह सत्संग स्वभाव टालने की फॅक्टरी है।*** *हम तब खुश होते थे कि काकाजी ने कैसी अच्छी बात की। लेकिन उसका*

मतलब तो समझें कि–हीरो या एटलस साइकिल बनाने की फॅक्टरी में से रोज़ कितनी साइकिलें बन कर निकलती होंगी। यूँ स्वभाव टालने की इस फॅक्टरी में जो भी कोई आए, स्वभाव टाल कर बाहर निकलेगा। धॅट वॉज़ गारंटी गिवन बाय हीम। पर, हम यह बात समझने के लिए तैयार नहीं थे... योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी और स्वामिजी ने अपने आपको कसनी में डाल कर कैसे समाज का सर्जन किया! ***जिसे भी अपना ट्रान्सफॉर्मेशन करना हो, उसे इस गुणातीत समाज में ही आना पड़ेगा...*** *सो, काकाजी ने जो राह बताई है, उसे हम पकड़ें...*

साथ ही प.पू. गुरुजी ने प.पू. निर्मलस्वामिजी द्वारा बताया **गोंडल मंदिर का** एक **प्रसंग** दोहराया। जिस **के विषय में बात करते हुए प.पू. गुरुजी इतने भावुक हो गए कि वे रो पड़े और प.पू. निर्मलस्वामिजी की आँखों में भी पानी आ गया।**

सभा के अंत में, **प.पू. निर्मलस्वामिजी** ने कहा–

...हमारे संप्रदाय में रिवाज है कि कोई भी दुःखी हो, तो उसे कहेंगे – 'तुम्हारा भला हो।' लेकिन, जैसे बैंक में बॅलेंस हो तो चॅक स्वीकार होता है, ऐसे ही ***गुरुजी के पास भजन का बॅलेंस है, तो सभी के मंगल की कामना करते हैं... इनके पास भजन और आध्यात्मिकता का खज़ाना है।*** *यह किराने की दुकान नहीं है...* ***गुणातीत समाज का सत्संग गॅरन्टिड है। यहाँ कल्याण फास्ट है... योगीजी महाराज कोई सामान्य साधु नहीं थे। विश्व में हमारे जैसा कोई भाग्यशाली नहीं है... ऐसे संत हमें जीवन जीने की चाबी देते हैं।*** *हम पहचान नहीं सकते। मूर्ति में, शास्त्र और ऐसे संतों में भगवान अखंड रहे हैं... हम अपनी दृष्टि बदलें, जिससे सब गलत दिखाई देता है। अंदर के ज्ञानचक्षु खोलेंगे, तो सत्य दिखाई देगा...* ***किसी को पूजना बहुत आसान है, लेकिन सेवन करना कठिन है और पूजन सबका होता है, पर सेवन एक का किया जाता है... गुरु का हाथ जब सेवक के सिर और तलिए पर होता है, तब उसमें भगवान बस जाते हैं। गुरु की शर्तों पर उनका सेवन करना है और अपनी गरज से लाभ लेना है।*** *मेहरबानी करके इन्हें मोहताज नहीं करना, यह खास ध्यान रखना। भले ही हमारे मन के मुताबिक हो या न हो...* ***संत जो भी चरित्र करते हैं, वह कल्याणकारी होता है...*** *गुरुजी ने शिविर का नाम 'आनंदोब्रह्म' दिया है; उनमें वह है, तो दे सकते हैं...*

विसर्जन प्रार्थना करने के बाद सभा का समापन हुआ और... रात्रि का भोजन करके सभी सोने के लिए चले गए।

दूसरे दिन यानि– **14 अगस्त** की सुबह भी 'फिक्स्ड टाइम धुन' के बाद नाश्ता करके सभी **'टेबल टॉप'** पर घूमने के लिए गए। वहाँ बहुत ठंडी हवा चल रही थी, फिर भी प.पू. गुरुजी ने करीब पंद्रह-बीस मिनिट धुन करवाई। पू. नक्षु को वहाँ घोड़े पर बिठाया, तो स्वयं घोड़े की लगाम पकड़ कर प.पू. गुरुजी ने सभी को अनोखी स्मृति दी। करीब एक घंटे प.पू. गुरुजी, वहाँ कुर्सी पर बैठ कर, सबको मूर्ति का सुख देते रहे। भुना हुआ व उबला भुट्टा खाकर सभी ने आनंद किया और... यकायक तेज़ बरसात होने के कारण सभी जल्दी-जल्दी गाड़ियों व बसों में बैठ कर

हॉटल के लिए रवाना हुए। बसें दूर खड़ी होने के कारण कई मुक्त तो बारिश में भीग भी गए। हॉटल पहुँच कर थोड़ा सॅटल होकर सभी ने दोपहर का भोजन किया। बारिश बंद हो चुकी थी। दिल्ली से प.भ. दिवेशजी इसी दिन सुबह आए थे, इसलिए पहले दिन बोटिंग के समय नहीं थे। सो, भोजन के बाद, दोपहर दो बजे के करीब, प.पू. गुरुजी व प.पू. निर्मलस्वामिजी सभी संतों, पवई के भाइयों व दिल्ली के कुछ हरिभक्तों को लेकर बोटिंग के लिए गए। तब प.पू. गुरुजी भी बोट में सभी हरिभक्तों के साथ बैठे। करीब साढ़े चार बजे सभी हॉटल वापिस आए। सायं छः बजे सभी हॉल में एकत्रित हुए। आरती के बाद शिविर की दूसरी एवं अंतिम सभा में भजन के बाद, दिल्ली के **प.भ. डॉ. दिव्यांग, प.भ. दिवेशजी व प.भ. आशिषभाई**, पवई के **प.भ. गिरीशभाई**, **पू. जस्मिनभाई एवं प.भ. आनंद भगत**, सुरत से आए अक्षरनिवासी पू. काशीरामभाई राणा साहेब के सुपुत्र **प.भ. दीपकभाई** ने अपने अनुभवों को व्यक्त किया। तत्पश्चात् **प.पू. निर्मलस्वामिजी** ने आशीर्वाद दिया–

...काकाजी ने योगीजी महाराज की दासत्वभक्ति देखी है। *सो, छोटा से छोटा हरिभक्त– जो गाँव का गँवार हो, खेती करता हो, जिसके कपड़ों का ठिकाना न हो, ऐसों को काकाजी अपनी धोती-कुर्ता दे देते। तो हम जो 'दास का दास' बोलते हैं या सुनते हैं, वहाँ हमें अपनी बुद्धि बंद करनी पड़े... सत्संग में चतुराई-होशियारी नहीं चलती, उसमें 'दास का दास' बनना पड़ता है... गुरु के पास तो दो हाथ जोड़ कर वे जो कहें वैसा... अभी सभी स्वरुप चौबीसों घंटे जो 'सुहृद्‌भाव' कहते हैं, उसके मुताबिक जीने की हम शुरुआत करें।* ***इन पुरुषों ने हमारे लिए खूब परिश्रम किया है, खूब दुःख झेला है। तो यहाँ से एक अच्छा दर्शन - एक सूत्र लेकर जाना है। हमारी जेब में पैसे होंगे तो जरूरत पड़ने पर हम उसे इस्तेमाल कर सकेंगे। इसी प्रकार कथावार्ता के शब्द याद रखना और जहाँ जरूरत हो वहाँ उपयोग करना... सत्संग में भी कुसंग होता है। जो हमारी अवगति कराए ऐसे के साथ नहीं बैठना।*** *योगीजी महाराज ने काकाजी से कहा था कि* ***मुक्तों की माया को पहचान भी नहीं सकते, वो साथ ही होते हैं...*** *हमें कुछ समझ नहीं आए, पर इतना ही कहा करें– 'वाह-वाह क्या शिविर!'*

प.पू. गुरुजी ने अपने आशीर्वचनों में सभी को खूब मार्मिक सूचन किया, जो बहुत ही मननीय है। अतः उसका संपूर्ण लाभ **पृष्ठ 17** पर लेंगे।

प.पू. गुरुजी के बाद **प.पू. वशीभाई** ने आशीर्वाद दिया–

...रिस्पेक्ट धी वर्ड्‌स ऑफ यॉर गुरु। एनजॉय यॉर गुरु, डोन्ट मार्केट यॉर गुरु। *वो भगवान का स्वरूप हैं, उन्हें अंतर में उतारो, उनके मुताबिक जीयो...* ***काकाजी कहते कि पॉजीटिव थिंकिग से भजन करो। हमारी दिक्कत यही है कि हम प्रॉब्लम को पकड़ कर धुन करते हैं।*** *प्रॉब्लम भी सरीखा और भगवान का नाम भी सरीखा! इसलिए दिल्ली मंदिर के हॉल में गुरुजी ने लिखवाया है कि अपनी प्रॉब्लम को छोड़ कर भजन का उपाय लो...*

स्पीरीच्युआलिटी ऐसी गेम है कि हम ब्रह्मरूप हो जाएँ...

इस शिविर में मुझे भी एक अनुभव हुआ। पहले मुझे ऐसा था कि काकाजी शताब्दी धामधूम से होनी चाहिए। जहाँ-जहाँ, समैया होना चाहिए... दो दिन पहले निर्मलस्वामी आए थे। वे मुंडन करा रहे थे, फ्री टाईम था, तो उन्होंने मुझसे कहा कि काकाजी की शताब्दी निमित्त हम शिविर ही करें। वैसे भी काकाजी को शिविर बहुत पसंद थी। एक्चुअली हम देखें तो स्प्रिच्युआलिटी इज़ वन टु वन रिलेशनशिप... बस, इस शताब्दी में हम ब्रह्मरूप हो जाएँ... मैंने हाँ की और सोचा कि गुरुजी सापूतारा आएँगे तो बात करेंगे। तो, विधाऊट अवर टॉकिंग, अभी मेरी गुरुजी से कोई बात नहीं हुई थी। मैं और भरतभाई गुरुजी से मिलने के लिए गए, तो सामने से टॉपिक निकला और गुरुजी बोले की काकाजी की शताब्दी जब तक आए, तब तक शिविर ही करेंगे! हमें गुरुजी ने सामने से कहा कि शिविर ही करनी है और काकाजी ने जो आध्यात्मिक करामात बताईं उनसे बारीक-बारीक कसर टालें...

देखो, भगवान भी कितने सांकेतिक हैं कि गुरुजी को ख्याल भी नहीं था कि पिछले साल पेरिस में इन्हीं तारीखों में सब इकट्ठे हुए थे और उन्हीं दिनों हमें यहाँ एकत्रित किया।

हमें भ्राँति पड़ गई है, पर हम हैं ही ब्रह्मरूप। हमारी आत्मा पर एक परत जो पड़ी है, वो भ्रांति सत्पुरुष निकाल देते हैं। हमारी चेतना का जो शुद्ध स्वरूप है, वो हमें दिखा देते हैं** और... गुरुजी ने जैसे बताया–हमारी जो प्रॉब्लम्स हैं, उसे हम शॅयर करें... मैं यह मानता हूँ कि 12, 13, 14 जो पिछले साल पेरिस में **काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी का चरण** मनाया, तो उन्हीं दिनों यहाँ शिविर होना भी शताब्दी का एक चरण हो गया! **पाँच जने बैठे हों या पच्चीस जने बैठे हों वह इम्पॉर्टन्ट नहीं है। बट वॉट टॉपिक यु आर डिस्कसिंग वो इम्पॉर्टन्ट है।

तत्पश्चात् **प.पू. भरतभाई** ने आशिष देते हुए कहा–

***...गुरुजी की जो भावना है, वो यही है कि हम जो इकट्ठे हैं, जो साथ में रहते हैं या सत्संग करते हैं और जो भी काकाजी के कहलाते हैं, वो अगर काकाजी के सिद्धांत से जीएँगे, वो ही काकाजी का सबसे बड़ा माहात्म्य है!** बाकी **लाखों लोगों को इकट्ठा करके शताब्दी मनाएँगे और हमारे अंदर यह नहीं रहेगा, तो शताब्दी का कोई अर्थ नहीं है...** गुरुजी ने इस शिविर में अपनी भावना के रूप में आशीर्वाद दिया है कि ऐसे **एकत्वभाव और सुहृद्‌भाव से हम जीने लगें, भले कोई न रखे। लेकिन हम जहाँ रहते हैं, वहाँ से–चॅरीटी बिगन्स एट होम।** वहाँ से ऐसा करेंगे तो सच में हो जाएगा, ऐसा गुरुजी का आशीर्वाद मिला है। यह आशीर्वाद सामान्य आशीर्वाद नहीं है, यह बहुत कठिन चीज़ है और यह कठिन चीज़ हम काकाजी की शताब्दी के अवसर तक में कर पाएँ और पहुँच जाएँ उसके लिए मौका है। तो इस मौके को हमें चूकना नहीं है। उसे किसी भी तरह हासिल कर ही लेना है। उसके लिए हम सही अर्थ में तैयार हो जाएँ... लाखों आदमी इकट्ठे करने से भी वो बढ़िया शताब्दी होगी...*

अंत में हॉटल के मैनेजर **श्री हल्दरजी**, शिविर के ऑर्गेनाईज़र व हमारे आत्मीय **प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी, प.भ. अनिलभाई 'शेठ'** ने प.पू.

गुरुजी, प.पू. निर्मलस्वामिजी, संतों, पवई के भाइयों एवं भक्तों के प्रति आभार प्रकट किया।

प.भ. सतीष बंसलजी शिरडी से प.पू. गुरुजी के दर्शन के लिए आ रहे थे, सो उनकी प्रतीक्षा में प.पू. गुरुजी ने सभा काफी देर तक जारी रखवाई फिर भी... **सभी के भीतर की भी यही भावना थी कि सभा समाप्त ही न हो।** लेकिन, अगले दिन तो मुंबई के लिए रवाना होना था, सो...

15 अगस्त, भारत के **स्वातंत्र्य दिवस** की सुबह, सभी जल्दी-जल्दी जाने की तैयारी में लग गए। प.पू. निर्मलस्वामिजी तड़के ही समढ़ियाळा जाने के लिए निकल गए। स्वतंत्रता दिवस की स्मृति में प.पू. गुरुजी दिल्ली से ही राष्ट्रीय ध्वज के बैच लेकर आए थे। सो, सभी को वे बैच लगाने के लिए दिए गए और प.पू. गुरुजी की सूचनानुसार गाड़ियों एवं बसों के फ्रंट पर भी राष्ट्रीय ध्वज लहराया गया।

दिल्ली से **प.भ. प्रमीतभाई** द्वारा भेजे 'वराही' के कन्टेनर में दिल्ली मंदिर से लाया गया सामान लोड होने लगा। इसी दौरान, हॉटल के बाहर बरामदे में प.भ. दिलीपभाई-'बापू' ने स्मृति के रूप में प.पू. गुरुजी, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई के साथ दिल्ली मंदिर के सभी संतों-सेवकों एवं पवई के भाइयों-सेवकों व दिल्ली-मुंबई-अमदावाद के हरिभक्तों की ग्रुप फोटो खींची। इसी प्रकार, प.पू. दीदी, प.पू. योगिनी बहन के साथ पवई व दिल्ली की बहनों तथा भाभियों की ग्रुप फोटो खींची।

सुबह सवा दस बजे के करीब सापूतारा से निकले। लगातार बारिश के कारण चारों ओर हरियाली छायी हुई थी। ऐसा दिलकश नज़ारा देखते-देखते, मिड-वे में दोपहर डेढ़ बजे, 'वृंदावन' रिसोर्ट में सभी ने भोजन किया। ढाई-तीन बजे के करीब मुंबई के लिए रवाना हुए और सायं 5:30 बजे मुंबई पहुँच कर, प.पू. गुरुजी के साथ कुछ मुक्त सीधा प.भ. अनिलभाई 'शेठ' के घर घाटकोपर पहुँचे। अन्य सभी पवई मंदिर गए, जहाँ **पू. अरुणभाई** एवं मुक्तों ने अल्पाहार की व्यवस्था की हुई थी। मंदिर में दर्शन करके सभी ने प्रसाद लिया।

और... आश्चर्य की बात, इतने थके होने के बावजूद **प.पू. वशीभाई** ने **प.पू. ज्योति बहन** के 'डिवाइन डे' और **प.पू. दीदी** के 'महाभिनिष्क्रमण दिन' की स्मृति करते हुए, प्रभु को धन्यवाद देने के निमित्त कि–पूरी शिविर में सभी की तबियत अच्छी रही, पाँच मिनिट धुन करवाई और खूब उमंग से भजन के रूप में गाते हुए प्रभु को धन्यवाद दिया–*'गुरुजी हमें ऐसे आनंद कराने के लिए ले गए, उसके लिए खूब-खूब थँक्स...'* तत्पश्चात् **प.पू. भरतभाई** ने संत के साथ संबंध दृढ़ करने की महिमा समझाते हुए छोटी सभा की। उधर घाटकोपर में प.भ. अनिलभाई 'शेठ' के परिचित, राजधानी ट्रेन के एटॅन्डन्ट **प.भ. वाघ**, के घर **प.पू. गुरुजी** पधरामनी करने के लिए गए। **इन सत्पुरुषों की कसनी-भक्ति देख कर दिमाग़ सन्न-सा हो जाता है कि 77 वर्ष की आयु के प.पू. गुरुजी, 60-62 वर्ष की आयु के प.पू. भरतभाई एवं प.पू. वशीभाई को भक्तों की कैसी महिमा कि वे उनके लिए अपनी देह की भी परवाह नहीं करते।** रात को प.पू. गुरुजी एवं मंदिर का पूरा स्टाफ प.भ. अनिलभाई 'शेठ' के नए फ्लैट एवं उनके द्वारा नीचे एरेन्ज किए एक अन्य फ्लैट में रूका और अन्य सभी मुक्त पवई में।

16 अगस्त की सुबह नए फ्लैट में प.पू. गुरुजी ने 6:40 की निर्धारित धुन की। तत्पश्चात् तैयार होकर नाश्ता किया। सुबह दस बजे तक पवई से प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई एवं मुक्तों के साथ सभी **'महापूजा'** के लिए आ गए। साढ़े दस बजे के लगभग **प.पू. वशीभाई** के साथ **पू. अभिषेक** ने महापूजा शुरू की। संजोगवश, **प.पू. ज्योति बहन** मुंबई 'गुणातीत ज्योत' में आई हुई थीं। सो, दोपहर बारह बजे के करीब पू. रसीला बहन को लेकर प.पू. ज्योति बहन दर्शन देने के लिए आईं। महापूजा के बाद प.पू. गुरुजी व प.पू. भरतभाई ने आशीर्वाद देकर पूर्णाहुति की और... सभी ने साउथ इंडियन व्यंजनों का प्रसाद लिया।

प.पू. गुरुजी तसल्ली से साढ़े-तीन बजे तक बैठे रहे। एक-दो बार उनसे मुक्तों ने आराम करने का आग्रह भी किया, क्योंकि फिर रात को नौ बजे की फ्लाईट से दिल्ली आना था। पर, **'भक्तों की खुशी मेरी खुशी है'**–यह प्रतीति कराने के लिए वे पौने चार बजे तक बैठे रहे। फिर खूब आग्रह करने पर मुश्किल से बीस मिनिट आराम किया। दोपहर करीब साढ़े तीन बजे तक तो भोजन करके फ़ारिग हुए ही थे कि प.भ. अनिलभाई 'शेठ' ने फिर सायं पाँच बजे चाय-कॉफी के साथ भेलपूरी-सेवपूरी के नाश्ते की व्यवस्था की थी। सो, चाय-नाश्ता करके 6:30 बजे सभी एयरपोर्ट जाने के लिए रवाना हुए। **प.भ. अनिलभाई 'शेठ'** एवं **प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी** ने मिल कर फ्लाईट के लिए भी भोजन पैक करके दिया था। सच, **इन मुक्तों की भावना को अंतर से नमन!** रात को 9:30 बजे स्पाईस जॅट की फ्लाईट मुंबई से उड़ी और रात को 11:20 बजे दिल्ली लैंड होने के साथ मानो सापूतारा शिविर की पूर्णाहुति हुई !

महत्त्व की बात यह है कि हम तो सोचते हैं कि हमें संत से प्रीति है, जबकि वास्तविकता यह है कि हमें जो स्वरूप मिले हैं उन्हें हमसे कई गुणा अधिक प्रीति है। सापूतारा से लौटने के पूरे महीने बाद 17 सिंतबर की सायं **प.भ. धीरूभाई कापड़िया** मंदिर आए थे। वे भी सापूतारा शिविर में आए थे।
उन्होंने प.पू. गुरुजी से कहा–***सच, सापूतारा में मज़ा आया। मैंने तो सोचा था कि इतनी बरसात है, गुरुजी कैसे करेंगे? पर, आपको तो नॅचर का शौक है।***
पलट कर प.पू. गुरुजी ने कहा–***मुझे नॅचर का शौक़ नहीं, पर भक्तों के संग रहने का शौक़ है।***
प.पू. गुरुजी की यह बात सुन कर अहसास हुआ कि नो डाउट, प.पू. गुरुजी की इन्हेरन्ट नॅचर ही खूब अपनेपन की है और उसी को ले करके ब्रह्मस्वरूप काकाजी ने उनके द्वारा अपनत्वयुक्त समाज का यहाँ विकास करवाया। **प.पू. गुरुजी** द्वारा कथित उपरोक्त वाक्य बता रहा है कि उन**के हृदय में ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज एवं गुणातीत समाज के मुक्तों-भक्तों के सिवा अन्य किसी का कोई स्थान नहीं है। पर, उनके इस दिव्य प्रेम का सही मोल हम चुका रहे हैं क्या?** भीतर में झाँकेंगे तो प्रसंग पर कहीं न कहीं हमारी स्थूल देह के सगे-संबंधी और मन (सूक्ष्म देह) के सगे-संबंधी (हठ, मान, ईर्ष्या इत्यादि) संत से अधिक होंगे।

सो, समय की अहमियत समझते हुए, केवल संत से-स्वरूप से-संबंध दृढ़ करने का एकमात्र उद्यम करने हम लगे रहें, वही शिविर की सच्ची फलश्रुति कहलाएगी।

14 अगस्त 2014 – प.पू. गुरुजी

आज निर्मलस्वामी ने जब बातें कीं–तो उनके लहज़े ने योगीबापा की स्मृति करा दी। बापा कपोलवाड़ी में भजन की कड़ियां यूँ गाते और फिर समझाते। सो, सबसे पहले तो इन्हें थँक्स।

आज सारी जो बातें हुई, आख़िर सबका एक ही सुर आता था–'एकता'। हम सब सुहृद्भाव, निर्दोषबुद्धि शब्द कितने सालों से सुनते ही आ रहे हैं। अब तो हम भी दोहराने लगे हैं। पर, बड़े पुरुष जिस ढंग से हमें बात करते हैं, उसे कई बार हम पकड़ते नहीं हैं। क्योंकि हम बे-ध्यान जैसे होते हैं। मानो, कई बार हम अपनी बात बड़ों से करते हैं, वे कुछ कहें भी या कुछ आशीर्वाद भी दें, तब हम तो बस अपनी समस्या का रिप्लाई कैसा आता है, उसे पकड़ते हैं। वे क्या कह रहे हैं, वह ध्यान से सुनने के लिए भी हम तैयार नहीं होते।

एक प्रसंग बता कर फिर मैं 'सुहृद्भाव' की बात करता हूँ। आप पूछोगे कैसे नहीं सुनते? हम जब सवाल पूछते हैं, तो संत जो कहेंगे वह नहीं सुनेंगे ऐसा तो होगा नहीं। पर, हमारा ध्यान केवल हमारे इंट्रेस्ट में ही होता है। निर्मलस्वामी एवं ज्ञानस्वरूपस्वामी को ख्याल होगा। मुंबई–माटुंगा में महीजीभाई रहते थे। वे काकाजी के चार्टर्ड एकाउंटंट थे। हम अक्षरभुवन में रहते थे। उनकी लड़की की शादी नहीं हो रही थी। इस बारे में वे जब भी बापा से बात करते, तो बापा कहते– *गोंडल में महापूजा कराओ।* वे महापूजा कराते। शादी की कहीं बात चलती भी, लेकिन सॅटिंग नहीं हो रही थी। फिर बापा से बात करते तो वे कहते– *'फिर महापूजा कराओ', इस बार महाराज सुनेंगे।* यूं करते-करते 6-7 बार बापा ने उनसे महापूजा के पैसे लिए। काकाजी के चार्टर्ड एकाउंटेंट थे, तो उन्हें काकाजी का जोग भी था। इसलिए काकाजी उन्हें समझाते-करते, तो वे फिर महापूजा करवाते। ज्ञानस्वरूपस्वामी भी यह जानते हैं कि अक्षरभुवन में मेरे लिए सेवा जैसा कुछ था नहीं। दोपहर को बापा उठ कर साढ़े तीन-चार बजे काग़ज़ लिखते, तो मैं वहां जाकर बैठता था। अन्य संत रसोई में–रोटी बनाने के काम में चले जाते थे। मुझे दर्शन करने का पहले से शौक़। एक बार मैं जाकर बैठा कि इतने में महीजीभाई आए और बापा से कहा– *आपने आशीर्वाद दिया था, कुछ हुआ नहीं। पिछली बार आपने कहा था और सब सॅट भी हो गया था, लेकिन आख़िर टाइम पर उन्होंने कहलवा दिया कि हमें ये रिश्ता नहीं करना है।* बापा ने पूछा– *उसने मना कर दी?* वह बोला– *हाँ, तुम्हारे आशीर्वाद कहां ठीक होते हैं।* मशीन बिगड़ा हुआ था। काकाजी साथ में थे। तो बापा बोले– *इस बार आप ऐसा करो, एक साल की महापूजा कराओ। महाराज क्यों नहीं सुनेंगे!* वह बोला– *आप कितने साल से महापूजा ठोके जा रहे हैं।* आपस का थोड़ा झगड़ा चला। फिर काकाजी ने उन्हें कुछ समझाया, तो वे महापूजा के पैसे देने के लिए तैयार हुए। फिर वे बोले– *देखो बापा, अभी अगर यह काम नहीं हुआ तो हमारी 'निर्दोषबुद्धि' नहीं* ***रहेगी।*** बापा ने कहा– *लो आशीर्वाद, 'निर्दोषबुद्धि'* ***आएगी।*** उसने कहा था–निर्दोषबुद्धि नहीं रहेगी। बापा के कहने का मतलब था कि है ही कहाँ? आनी बाकी है! काकाजी ज़ोर से हंसे भी। वे हंसे इसलिए कि महीजीभाई बापा का बोलना समझे ही नहीं थे। ऐसा हमारा भी होता है। साधु कुछ कहते हैं तो ऐसा होता है कि बस कह दिया, अब काम हो जाना चाहिए। बाकी सब कुछ जो कहो, वो प्रभु! आप ही समझो।

इसी तरह मैंने नोट किया है कि राइट फ्रॉम 80-81 से काकाजी कहते थे – *शिष्टाचार का सुहृद्‌भाव नहीं रखो।* हम भी ये सुहृद्‌भाव की बातें करते ही रहते हैं, पर अंतर से हमारी एकता नहीं होती, अंतर से सुहृद्‌भाव नहीं रहता।

...आज सभी ने जो बातें कीं, उनमें से महाराज बोल गए। **शिविर की इन बातों में से कुछ भी पकड़ कर जाएँगे, तो हमारी तरक्की रॉकेट स्पीड से हो जाएगी। लेकिन मचकूर को पकड़ना पड़े। हम 'एकता-एकता-एकता' की बात किया भी करें, लेकिन काकाजी कहते थे – *हमारे विहैव में झीनी-झीनी कसर हमें एक्सपोज़ कर जाती है।* हमारे व्यवहार में एक्सपोज़ हो जाती है। गुणातीतानंदस्वामी** ने कहा है – **साधु के व्यवहार द्वारा उसकी 'साधुता' का पता लगता है।** संस्कृत में भी कहा है – *'व्यवहारेण साधु'।* तुम किस तरीके से इन्टरेक्ट होते हो, उससे आपकी साधुता का ख्याल पड़ता है। **तुम इतने व्रत करो, दंडवत् करो, तप करो, माला फिराओ इससे साधु की कोई क़ीमत नहीं है।** यह सब नहीं करना है, ऐसा मैं नहीं कहता। मैं युवक था तब मैंने सौ-सौ दंडवत किए हैं – ये ज्ञानस्वरूपस्वामी जानते हैं। बापा ने मुझे आज्ञा की थी कि पुराने मंदिर जाकर घनश्याम महाराज की मूर्ति को 100 दंडवत् रोज़ करना। बापा के साथ खूब लगाव, सो करते भी रहते थे। मैंने भजन भी मेरी गरज से रात-रात को जग-जग कर किया है। ऐसी बात नहीं कि ये चीजें नहीं करनी, पर वो साधुता का मेजरमेंट नहीं है। ओहो! इतना दंडवत् करता है – कैसा साधु लड़का है – ऐसी बात नहीं है। **तुम किस तरह भक्तों-मुक्तों के साथ रियेक्ट कर जाते हो, इंटरेक्ट कर जाते हो, उससे वो साधु कैसा है, उसका ख्याल पड़ता है।** 'एकता-एकता' की बात करते हैं। पर, हम कैसी गलती खा जाते हैं बताता हूँ। यह बात काकाजी थे तब की है। हम दिल्ली में ज़मीन के लिए कोशिश कर रहे थे। वडोदरा के महाराजा रंजीत सिंह के साथ रॅपर्ट था; दूसरी विद्याबेन शाह थी। उनके ज़रिए डी.डी.ए. के वाइस चॅरमॅन की हमें एपॉइंटमेंट मिली थी। ज़मीन देने के लिए डी.डी.ए. वाले किसी तरह तैयार नहीं थे – खास करके अशोक विहार में। हमें ऐसा भी नहीं था कि अशोक विहार में ही मिले। क्योंकि काकाजी यहां रहे हैं, तो इतना था कि हमें यहीं कहीं नज़दीक मिल जाए तो अच्छा है। पर, हमने इन्सीसटन्स नहीं रखा था – क्योंकि हमें दिल्ली में कहीं भी ज़मीन चाहिए थी। वाईस चॅरमॅन से मेरी बातचीत हुई। उन्होंने कहा – *स्वामी, अशोक विहार में जगह है ही नहीं।* मैंने कहा – *साहेब जगह है।* तो उन्होंने टाउन प्लानर को बुलाया और... तै किया कि *सन डे को हम वहां सर्वे के लिए आएंगे और आप बताना कि कहां-कहां जगह है। हमारा टाउन प्लानर भी साथ में होगा।*

अब बात ध्यान से सुनना। उन दिनों विद्यानगर से पप्पाजी बहनों का ग्रुप लेकर आए थे। पप्पाजी आए, बहनें आईं तो अच्छी तरह आवभगत-सत्कार हुआ। जिसे कहते हैं न कि प्यार दिखाया हो और वे सॅटर डे की शाम को रात की गाड़ी से देहरादून जाने वाले थे। मुझे मन में ऐसा था कि वी.सी. मंदिर में आए, तो उन्हें ऐसा इम्प्रेस कर दें कि उन्हें हो जाए कि इन लोगों को जगह देने जैसी है। मेरे दिमाग़ में यह विचार था ही। और...

वो 30-40 बहनें थीं, साहेब भी थे–मानो एक एज्युकेटेड युवकों का समाज! विचार आया कि ये सब हों, तो वी.सी. जाने कि इनके पास एक अच्छा समाज है। लेकिन, दूसरी तरफ मेरे मन में ऐसा भी हुआ कि ये विद्यानगर वाले अपने तो हैं नहीं। उस समय जो मन में था वह बात करता हूँ। हमें क्यों अपनी बात इनके पास खोलनी? आए हैं तो काकाजी के भाव से सेवा की है। मन को पटा लेने की यह बात थी। कहते हैं न–माइंड इज़ धी ग्रेटस्ट लॉयर। तुम्हारी हर बात को वो तुम्हें कन्वींस करा देगा। एक बार तो मुझे विचार आया कि इन्हें कुछ कहना ही नहीं है। दूसरी तरफ यह टेम्प्टेशन भी थी कि बहनों को-साहेब इत्यादि को वी.सी. देखे, तो अपना काम हो जाए। उस समय मोबाइल का कोई सिस्टिम नहीं था कि काकाजी से बात हो सके। सो, मुझे ऐसा हुआ कि चलो, पप्पाजी से बात तो करें कि आज रात जाने वाले हैं, उसके बजाय एक दिन रुक जाओ। अपनी ज़मीन के लिए कल वी.सी. आ रहा है। मैंने पप्पाजी से क्लीयर बात की कि बहनों और साहेब का पूरा ग्रुप वो देखे, तो हमारा एक काम सॅट हो जाए। देखो, पप्पाजी तो कैसे सिम्पल! उन्होंने कह दिया है– *हम दिल्ली आए हैं, तो तू जो कहे वैसा हमें करना है।* मैंने कहा– *आपकी सारी टिकिट्स बुक हो गई होंगी।* पप्पाजी ने अपने स्टाइल के मुताबिक हंसा दीदी को लिख कर भेज दिया कि *अपनी कल की टिकिट्स कॅन्सल करवा दो, हम सोमवार को जाएँगे।* वी.सी. ज़मीन देखने के लिए आने वाले थे, सो मैंने उनसे कहा था– *आप मंदिर होते हुए जाना।* उन्होंने कहा– *मैं दो मिनिट से ज़्यादा नहीं रुकूँगा।* मैंने कहा था– *आप एक मिनिट में चले जाना।* मुझे तो ऐसा था कि सब देख कर वे तो स्पैलबाउण्ड हो जाएँगे। वी.सी. आए; साहेब ने उस दिन जो प्रवचन किया–ये वच्छराज वगैरह साक्षी हैं कि वी.सी. तकरीबन डेढ़ घंटा बैठे। उस समय तो साहेब खूब स्पीड में बोलते थे। साहेब ने तो पूरा आधा घंटा बात की– *आप हॉस्पिटल को ज़मीन देकर क्या करेंगे, व्यक्ति भले अच्छा हो जाए पर संस्कार नहीं हों तो? स्कूलों को दोगे तो क्या पढ़ेंगे? मंदिर को दोगे तो बच्चे संस्कारी बनेंगे...* फिर मैंने वी.सी. से कहा– *अब दो मिनिट तो आप बोलिए।* वह बोला– *बोलना क्या है, तुम्हें जो कराना है करा लो!*

देखो, **हम एकता की बात करते थे, पर आंतरिक एकता में सेंध लगी ही थी न? तभी तो भीतर में एक अलगाव-परायापन बना था। काकाजी तो ऐसी एकता की बात करते थे कि हमें आपस में रंचमात्र भी अलगाव (ओरोभाव) नहीं होना चाहिए कि ये हमारे सॅन्टर के, ये तो विद्यानगर के–उनके सामने अपनी सारी बातें थोड़े ही करनी होती हैं?** पर, अगर भीतर की गहराई से सोचेंगे, तो हम यही करते रहते हैं। जैसे कि अपने सॅन्टर की ऐसी कोई त्रुटि हो, तो वह इन्हें थोड़े बतानी चाहिए? मैं नहीं कहता कि उसका ढिंढोरा पीटो। पर, **जो हमें सहायक होते हैं, उनसे चर्चा कर लेने में मन की चोरी न रखें। अगर यह रवैया छोड़ देंगे, तो महाराज हमारा सारा काम अपने आप करते रहेंगे। यह 'व्यवहारेण साधु'!**

इसका एक रीसेन्ट उदाहरण देता हूँ। वशी जानता है : अभी-अभी मैं मुंबई गया था। वशी के साथ मेरी पहले से एक इंटीमसी है। दिल्ली मंदिर में एक प्रॉब्लम खड़ा हुआ था। मैं सोचता था कि वशी से मैं यह बात

करूं कि वहां से फलां को भेजें, तो हो सकता है कि हमारा प्रॉब्लम सॉल्व हो जाए। उसमें मुझे ऐसा विचार नहीं करना पड़ा कि अपने दिल्ली सॅन्टर की बात मुंबई में इसे कहने की क्या जरूरत है? अगर अलगता होती, तो मन में ऐसा होता। और, वशी से बात कर ही रहा था कि उसी समय भरतभाई भी अंदर आए। भरतभाई के साथ भी इसी तरह से बात हुई। फिर हमने सोचा कि जाकर देखते हैं, यदि जरूरत पड़ेगी तो भेज देंगे। आप मानोगे नहीं, **जो बात 30-35 दिन से मेरे लिए एक बड़ा टेंशन बन कर खड़ी थी, मुंबई से दिल्ली वापिस आने के दो दिन के अंदर अपने आप सॉल्व हो गई।** मैं समझता हूँ कि **महाराज ने वो इसलिए सॉल्व कर दिया कि मैंने दिल्ली-मुंबई का कोई फ़र्क रखा नहीं। साथ में बैठकर खाना खाएँगे, हाहा-ठीठी करेंगे–यह एकता तो सब जगह होती है, लेकिन जहां अपनी ऐसी छोटी-छोटी कसर हमें मुक्तों से अलग करती है, जहां हमें अपनापन महसूस नहीं होने देती, वो टल जाए उस हेतु अब हमें प्रार्थना करनी है–तैयार रहना है।**

ऐसी एक और दूसरी बात करता हूँ। एक बार दिल्ली तीन-चार संत आए थे। उन्हें मेरे साथ थोड़ी दोस्ती थी। उन्होंने मुझसे कहा– *गुरुजी कल आप गुजरात जा रहे हो न? फलां-फलां तीन-चार संत कल भाग जाने वाले हैं, लेकिन साधु अच्छे हैं। हो सके तो आप वहां बता देना कि इन पे वॉच रखें, वे भाग न जाएँ।* उसने भलाई से बात की थी। हम लोग तड़के साढ़े चार बजे पहुँचे थे कि इससे पहले वे साधु वहाँ से निकल गए थे। वहाँ मैं एक वडील संत के रूम में दाखिल हो ही रहा था कि उनके पास इस बारे का फोन आया होगा। वे वही मॅसेज अटेंड कर रहे थे। मुझे देखकर एकदम फोन के साथ अंदर चले गए, क्योंकि उन्हें ऐसा हुआ कि अपने सॅन्टर की बात गुरुजी को पता नहीं लगनी चाहिए। अरे! मैं तो तुम्हें वही कहने के लिए आया हूँ कि ये चले जाने वाले हैं। पर, जब वे चले ही गए हैं, तो क्या कर सकते थे? देखो, ऐसा एक अंतराय-अलगाव आपस का रहता है।

आत्मीयता, एकता, सुहृद्‌भाव की बातें तो हम सब करते रहते हैं, लेकिन अपने स्वभाव, बारीक-बारीक, झीनी-झीनी कसर जो हमारे नोटिस में भी नहीं आती, वो हमें अपने व्यवहार में कामयाब नहीं होने देतीं। तुम हक़ीक़त में कितने आध्यात्मिक हो, वह तुम्हारे व्यवहार से पता लगेगा। अगर वो स्वामी टोटल आध्यात्मिक होते, तो यूँ बीहेव नहीं करते। मानो मैं पवई गया हूँ, तो जस्मिन को भी यह बात करके आऊं–ढिंढोरा पीटूँ, वो मैं नहीं कहता। पर, वशी या भरतभाई–जो अपने एक सॅन्टर को हैंडल करते हैं, हमारे इंटीमेट हैं, उनसे मैं पर्दा क्यों रखूं? जब मैं मानता ही हूँ कि जैसा मैं काकाजी का हूँ, वैसे ये भी काकाजी के हैं। कई बार कई लोग कहते हैं– *व्यवहार अलग चीज़ है और आध्यात्मिकता अलग चीज़ है।* कई गृहस्थ भी कहते हैं– *व्यवहार के काम के लिए संतों को थोड़ा पूछना होता है? हाँ, आध्यात्मिकता हो तो ठीक है।* तो ये चीज़ ढूंढ-ढूंढ कर उससे **खूब सावधान रहें-कॉन्सियस रहें कि हठ, मान, ईर्ष्या की सूक्ष्म कसर हमारी आंतरिक एकता में कहीं सेंध न लगा दें। काकाजी जिस एकता, सुहृद्‌भाव और आत्मीयता की बात करते थे वो इस लेवल की!**

मैंने कल कहा था कि **हमने खूब तरक्की जरूर की है, पर दिल्ली अब भी काफ़ी दूर है।** दूसरी बात यह भी है–**जैसे ही यह चीज़ सॅट कर लेंगे, हमारे सारे काम इमीडियेट संपन्न होते जाएँगे। इसमें भी देरी नहीं लगने वाली है।** यह बात करने के लिए मैं ऐसी शिविर की-ऐसे प्लॅटफॉर्म की काफ़ी समय से राह देख रहा था। इन लोगों ने सही कहा कि चार महीने से इसकी सॅटिंग में रहे। कम से कम 6-7 सर्क्युलर्स तो तुम्हारे पास चेइन्ज होते-होते आए होंगे... मुझे कैसा था? मुंबई से सब आ रहे हैं, जो काकाजी से जुड़े हुए हैं। बाकी के भी जो आए हैं, वे काकाजी के प्रति खूब भावना वाले हैं। अमदावाद के इस नए समाज को भी काकाजी और सब सेन्टर्स के साथ एक एटैच्मेंट–अपनापन है। हमारा ये दिवेश स्ट्राइकिंग एग्ज़ाम्पल है। इसे दिल्ली-मुंबई में ऐसा कोई भेदभाव-फ़र्क है ही नहीं, क्योंकि वो ऐसा जानता है कि गुरुजी के लिए मुंबई भी दिल्ली जैसा ही है। सो, उसके अंदर वो चीज़ अपने आप डेवलप हुई है। आप विचार करो; दिल्ली में अभी सब सॅटल हुआ है। पहले–अप टु नाइन्टीन एईटी सिक्स, हर महीने काकाजी ढाई-तीन हज़ार भेजते थे, तब दिल्ली का सेंटर चलता था। काकाजी ने कभी माना होगा कि यह अलग है? हमारे मुंबई का पहले रखो। ऐसा नहीं था, तो हम क्यों ऐसा करें? **जब तक हमें ये सेंटर्स दिखाई पड़ेंगे न, हम यह एकता डेवलप नहीं कर पाएँगे। हर जगह पर यह सब कुछ काकाजी का है, यह मानेंगे तो एकता अपने आप रहेगी और अलगाव कराए वो ज्ञान अपना नहीं है–हर एक में भगवान को देखें।**

मैं तुम्हें एक दूसरी अच्छी बात करता हूँ। सब जानते हैं कि काकाजी स्वधाम गए तब तकरीबन डेढ़ साल तक मैं खूब डूबा रहा। मैंने पहले भी कहा है–मेरा नॅचर वैसे स्वतंत्र है, लेकिन मुझे उँगली पकड़कर चलने की आदत है। ये डॉक्टर नीलम मानती ही नहीं कि ऐसा हो ही नहीं सकता कि स्वतंत्र मिज़ाज़ का हो, वो उँगली पकड़ कर चले। पर, उसमें ऐसा है कि हम उँगली इसलिए पकड़ते हैं कि हम सेइफ रहें और... जिसकी उँगली पकड़ी है, उससे कहें कि मुझे जहाँ जाना है वहाँ ले जा। मैं जहाँ चाहूँ मुझे वहाँ पहुँचा। तो, मैं काफी डिस्टर्ब रहता था। पर प्रगट का ज्ञान माना भी था कि (सत्पुरुष) जाते तो हैं नहीं। अपना ज्ञान प्रगट का है-प्रगट की उपासना है। मैं सोचता था कि मुझे सबूत मिलना चाहिए कि काकाजी अपने साथ हैं। मैं 'स्वामी की बात' पढ़ता रहता था, पर कोई ठोस सबूत मिले नहीं। फिर, पत्रिका की कोई मॅटर थी, उसके लिए मुझे गीता का कुछ रॅफरंस चाहिए था। हमारे पास गोपाळानंदस्वामी का 'गीता भाष्य' है। मैंने सोचा कि उसमें से गुजराती में भी मिल जाएगा और जो मैं ढूंढना चाहता हूँ वो मिलेगा। पर, उस समय वो बात तो मुझे मिली नहीं; हाँ छठे अध्याय का एक ३०वां श्लोक मिल गया। उसमें लिखा है– ***'यो मां पश्यति सर्वत्र'* अर्थात् –जो मुझे हर जगह देखता है, *'सर्वं च मयि पश्चति'*–मुझ में सबको देखता है; *'तस्याहं न प्रणश्यामि'* –उसके लिए मैं कभी नाश नहीं हो सकता, *'स च मे न प्रणश्यति'* और वह भी मेरे लिए कभी मरता नहीं है।** मुझे हुआ कि यह तो बहुत अच्छी बात आ गई... प्रभु को यदि हमारे साथ हमेशा हाज़राहज़ूर अनुभव करना

हो, मानना नहीं–बल्कि हमारे साथ प्रभु की प्रेज़न्स की हमेशा अनुभूति करनी हो, तो यह बात पकड़नी ही पड़ेगी कि **सबके अंदर काकाजी ही काम कर रहे हैं। सब में काकाजी को देखें और काकाजी में इन सबको देखें। पप्पाजी, स्वामिजी, साहेब को देखें।** उस समय मुझे तो ऐसा फील होता था कि भले हम प्रगट की डींगे मारते रहते हैं, लेकिन मैं निराधार तो हो गया। अगर काकाजी की अनुभूति करनी हो, तो मुझे इस बात को मानना ही पड़ेगा। क्योंकि तब हुआ भी ऐसा था कि जैसे ही किताब खोली, तो वही श्लोक निकला। दो दिन पत्रिका तो बाजू में रह गई, मैं उसी सोच में बैठा रहा था। पर, यह डिसाइड कर ही लिया क्योंकि गरज थी। मैं ऐसा समझता हूँ कि जो कोई ऐसा कहता है कि– नहीं, यह तो हमसे नहीं होता, तो समझना गरज ही नहीं है या तुमने इस बात को सच माना ही नहीं है। गीता तो आध्यात्मिकता की ऑथेंटीसीटी कही जाए।

हम समझें कि–यह ज्ञान हम पर थोपने के लिए संतों ने नहीं कहा, बल्कि हमारा काम सुलझाने के लिए कहा है कि यह करोगे, तुम्हारा बाकी का सब हो जाएगा। काकाजी गए-गए जो फील होता है, उसके बजाय सभी के अंदर मुझे देखो। मैं तेरे साथ हमेशा रहूँगा। वो जो हिम्मत अंदर-भीतर रहनी चाहिए, वो इसी से मिलती है और इसीलिए यह ज्ञान है। **संतों को अपना ज्ञान हम पर लाद कर, थोप कर संप्रदाय का बढ़ावा करना–ऐसा नहीं है, बल्कि वो हमारे विकास के लिए है।**

इस शिविर में से यदि यह एक बात भी पकड़ कर जाएँ कि अब माइंड कितना ही उछल-कूद करे, हमें अपने–**एट लीस्ट ये तीन सेन्टर्स के बीच ऐसा कोई अंतराय, कोई पर्दा, कोई डिस्टेंस–ए डिस्टन्स ऑफ इवन ए पोईन्ट ज़ीरो-ज़ीरो-ज़ीरो वन मिलीमीटर भी नहीं रखना है। 'हम सब एक'–सिर्फ नारा थोड़ा लगाना है?**

मैं तो श्री कृष्ण वाली बात पर भी खुश हो गया। भगवान श्री कृष्ण ने एक बार रुक्मणी के प्रति खूब प्यार जताया। राधा ने कहा– *आप प्यार तो मुझे ज़्यादा करते हो, लेकिन शादी तो रुक्मणी के साथ की।* कृष्ण तो बड़े होशियार, उन्होंने एकदम कहा–*देख, शादी करने के लिए तो दो जने चाहिए। रुक्मणी और मैं–तो हम दो हुए न। तू और मैं तो एक ही हैं, कैसे शादी करेंगे?* हम हंसते हैं, लेकिन वे डेप्थ समझा कर गए। इस तरह काकाजी जो गए-गए लगता है, वो ऐसे हमारे साथ हर पल एक ही हो जाएँगे। **मुक्तों में महाराज को देखना–दिव्यभाव से देखना वो कोई 'ज्ञान' नहीं है। महाराज की हमारे साथ की हाज़राहज़ूर अनुभूति करने का एक तरीका है।** यह बात यदि हमारी समझ में आ गई, तो हमारी गरज से हम अपने आप करने लग जाएँगे। इसका भी महाराज ने रास्ता दिखाया कि चलो, **कोई चीज़ नहीं होती है, तो भजन तो करो-याद तो करो, वो भी हम नहीं करते। ऊपर-ऊपर से बोलते हैं 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण'। अरे! ऐसे बोलना चाहिए जैसे कि मैं हमेशा कहता हूँ हम बोलें 'स्वामिनारायण' और उन्हें सीने में गोली लगनी चाहिए...** पर हम करते नहीं हैं।

...मुझे एक बार किसी ने सवाल पूछा– *गुरुजी, कृष्ण पांडवों के साथ इतने थे। आप तो कहते हो कि–हम अगर भगवान के हैं, तो भगवान का फर्ज़ है कि या तो वे हमारा रास्ता बदलें या हमारी जीत करवाएँ। तो, पांडव जुआ में हार क्यों गए? अगर कृष्ण पाण्डवों के साथ थे, तो पांडव हार क्यों गए?* एक बार तो मैं भी विचार में पड़ गया, पर मुझे उस समय एकदम काकाजी याद आए। काकाजी की कोई भी क्रिया देखें तो वे कहेंगे– *चलो, काम करने से पहले दो मिनिट धुन कर लें।* मैंने उससे पूछा– *तूने महाभारत देखी है?* वह बोला– *हाँ, तभी तो मैं पूछ रहा हूँ।* मैंने कहा– *वे कृष्ण के थे जरूर, लेकिन जुआ खेलने से पहले युधिष्ठिर ने दो मिनिट के लिए भी कृष्ण को याद किया था?* पूछने वाला काकाजी के प्रति श्रद्धा वाला था। मैंने कहा – *तू सोच, अगर काकाजी भी जुआ खेलने बैठें, तो पहले बोलेंगे नहीं–चलो, दो मिनिट धून कर लें।* वो बोला– *हाँ, यह बात सही है; काकाजी अगर जुआ भी खेलें, तो बोलेंगे कि चलो दो मिनिट धुन कर लें।* पांडवों ने याद नहीं किया, इसलिए वे हारे। अगर उन्होंने याद किया होता तो 'महाभारत' का पासा ही पलट जाता। वो महाभारत होती ही नहीं।

देखो, ये छोटी-छोटी चीज़े हैं; लेकिन खूब सच्ची हैं, आर्ग्युमेन्ट करने के लिए नहीं हैं। बस हम यह बात पकड़ कर जाएँ कि **हमें एकता इन 'इट्स लॅटर एन्ड स्पिरीट' रखनी है। हर टाइम-हर चीज़ के लिए भजन का सहारा लें और अपना काम इन्सटन्ट कराने के लिए मुक्तों के अंदर काकाजी को देखें।** फिर वो मुक्त तुम्हारा चहेता हो या चहेता नहीं हो। ऐसा होता ही है–मैं तो कई बार कहता ही हूँ कि हम 'एकता-एकता' की बात करते हैं, पर–'अक्षरज्योति' में 7 या 8 रूम हैं–वे भीतर में खुद विचार करें कि हम सच में एक हैं या एक टोकरी में भरी हुई आम जैसे हैं–जैसे काकाजी कहते थे। **एक पेड़ पर आम भले अलग-अलग डाली पर हों, पर वो एक बोले जाएँगे और टोकरी में भरे हुए आम एक नहीं बोले जाते। सो, इस शिविर में से हम–सापूतारा यानि 'गुजरात की आंख का तारा', तो यह 'तारा' लेकर जाएँ–ध्रुव का तारा!** यह निशान हमें एचीव करना है। बस यह करने के लिए निर्मलस्वामी समढियाळा में रहते हुए हमारे लिए प्रार्थना करते रहें, वशी महापूजा करता रहे। हम जबरदस्ती इस रास्ते पर चलने लग पड़ें-इतना करा दो। **अपने तीन-चार सेन्टर्स में कर ही लेना है, जिन्हें काकाजी का कहा जाता है। पूरे सत्संग में सभी यह जानते हैं–दिल्ली यानि काकाजी का सॅन्टर, शिकागो यानि काकाजी का सॅन्टर, पवई यानि काकाजी का सॅन्टर। हमें यह सोचना है कि हम सच में काकाजी के हैं? लेबल लगाने से कुछ नहीं होता।** दुनिया भले कहे कि काकाजी का सॅन्टर। वो काकाजी के सेन्टर्स को हम बनाए रखें। मैं हमेशा कहता हूँ कि–हमारी हरेक एटीट्यूड ऐसी होनी चाहिए कि यहां जो भी कोई आए, उसे लगे कि यह 'हमारा मंदिर' है। हक़-दावे से हमें कह सकें। पर, उससे पहले–चॅरिटी बीगीन्स एट होम ! मंदिर में रहते हम पांच संतों, 15 बहनें या 5 सेवक ऐसी एकता से रहें, जो हरेक को प्रेरणा देती रहे और हमारी तरक्की होती रहे। हम सभी का व्यावहारिक और आध्यात्मिक विकास हो-ऐसे निर्मलस्वामी जरूर आशीर्वाद दे जाएँ।

✡✡✡

अन्नकूटोत्सव

दिनाँक 24 अक्तुबर, 2014, शुक्रवार की सुबह

गुणातीत कुनबे का वार्षिक स्नेहमिलन – 9:30 से 11:30

अन्नकूट आरती – 11:45 बजे

सपरिवार ईष्ट मित्रमंडल सहित पधारने आपको हार्दिक निमंत्रण है।

स्थान : श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर

'ताड़देव', काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोकविहार -III , दिल्ली - 110 052

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 3.10.'14, शुक्रवार	—	**दशहरा, प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का पार्षदी दीक्षा दिन**
(2)	दि. 5.10.'14, रविवार	—	एकादशी, व्रत
(3)	**दि. 7.10.'14, मंगलवार**	—	**शरदपूर्णिमा, मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी का प्राकट्य दिन** **प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन** **प.पू. दिनकरभाई की प्राकट्य तिथि**
(4)	दि. 10.10.'14, शुक्रवार	—	ब्रह्मस्वरूप जागास्वामिजी की जन्मजयंती
(5)	दि. 19.10.'14, रविवार	—	एकादशी, व्रत
(6)	दि. 20.10.'14, सोमवार	—	वाघबारस
(7)	**दि. 21.10.'14, मंगलवार**	—	**धनतेरस (अशोकविहार मंदिर में 'धनपूजा'–सायं 4:40 से 6:00)**
(8)	दि. 22.10.'14, बुधवार	—	अक्षर चौदस
(9)	**दि. 23.10.'14, गुरुवार**	—	**दीवाली (अशोकविहार मंदिर में 'शारदा पूजन'–सायं 6:00 से 8:00)**
(10)	**दि. 24.10.'14, शुक्रवार**	—	**अन्नकूटोत्सव, नूतन वर्ष–विक्रम संवत 2071 प्रारंभ** **दिल्ली गुणातीत कुनबे का वार्षिक स्नेहमिलन–सुबह 9:30 से 11:30** **अन्नकूट आरती – सुबह 11:45 बजे**
(11)	दि. 25.10.'14, शनिवार	—	**भैयादूज**
(12)	दि. 28.10.'14, मंगलवार	—	**लाभपंचमी**
(13)	दि. 3.11.'14, सोमवार	—	प्रबोधिनी एकादशी–व्रत तुलसी विवाह-प्रारंभ *'अक्षरज्योति' में ठाकुरजी के समक्ष सब्जी की हाट लगेगी।*
(14)	दि. 6.11.'14, गुरुवार	—	**देवदिवाली**, तुलसी विवाह-समाप्त, श्री गुरुनानक जयंती
(15)	दि. 18.11.'14, मंगलवार	—	एकादशी–व्रत

R.N.I. 28971/ 77 *(Air Mail)*

'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months

If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO** ***FOR*** **YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**

'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281

Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052